मधुबन ओम् शान्ति अंक 273 अप्रैल 2015

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(12-03-15)

प्राणेश्वर प्यारे-प्यारे अव्यक्त बापदादा के अति स्नेही, सर्व शक्तियों के भण्डार से भरपूर, अखुट खजानों के दाता, अमृत कलषधारी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी समय प्रमाण अव्यक्त बापदादा के इशारों को कैच करते हुए, बापदादा के स्नेह का रिटर्न एक सेकेण्ड में फरिश्तेपन की झलक और फलक दिखाने की सेवा कर रहे होंगे! बाबा कहते बच्चे अब ऐसे समाधान स्वरूप बनो जो सर्व आत्माओं की समस्यायें स्वत: समाप्त हो जाएं। अब पुरुषार्थी जीवन में रहने से भी ऊपर दातापन की स्थिति में रहो। ऐसी प्रैक्टिस करो जो वातावरण में कैसी भी हलचल हो लेकिन आपकी स्मृति और वृत्ति अचल अडोल एकरस हो। जरा भी हलचल न हो कि यह क्या हुआ! बोलो, ऐसी प्रैक्टिस चल रही है ना! क्योंकि जैसी वार्ता चलती है वैसा वहाँ का वातावरण बनता है और जैसा वातावरण होता है वैसा वायुमण्डल हो जाता है फिर उसके वायब्रेशन दूर-दूर तक स्वत: जाते हैं। इसके लिए बाबा कहते बच्चे बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश.. जो बातें बीत गई वह याद भी न आयें क्योंकि जैसा चिंतन होता है वैसी चित्त वृत्ति हो जाती है। एक है मनन, दूसरा है चिंतन, तीसरा है मंथन और चौथा है सिमरण। कहा जाता सिमर सिमर सुख पाओ तो सब कलह कलेष मिट जायेंगे। बाबा की ऐसी मीठी मीठी बातें याद करने से और कोई बातें याद आती नहीं हैं।

मधुबन में पिछले सप्ताह 35 वर्षों से पुराने करीब 135 डबल विदेशी बाबा के पक्के निश्चयबुद्धि बच्चों से तीन दिन बहुत अच्छी मीठी मीठी गहरी रूहरिहान होती रही। कमाल है मीठे बाबा की जो विश्व के कोने-कोने से कैसे अपने बच्चों को चुना है। एक एक बाबा के बच्चे को देख ऐसे लगता जैसे सभी के दिल में एक राम (बाबा) ही बसता है। बाबा कहते हैं मेरे एक है महावीर बच्चे, दूसरे हैं महारथी। महावीर हनूमान कैसे अपनी पूंछ से सेवा कर रहे हैं। श्रेष्ठ वायब्रेशन से ही सारे विश्व की सेवा हुई है। महावीर माना ही जिसे साधारण संकल्प भी न आये, उसमें इतनी प्युरिटी हो, जिसमें 100 परसेन्ट सच्चाई और निश्चय हो। तो हर एक अपने आपसे पूछे कि मैं महावीरपने की क्वालिटी वाला हूँ? दृष्टि, वृत्ति, स्मृति ऐसी नेचुरल बनी है जो एक बाबा के सिवाए दूसरा कोई नहीं! ऐसी महीन चेकिंग करते अब हर एक को ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर वैजयन्ती माला में आना ही है। बोलो, आप सभी भी ऐसा ही लक्ष्य रख बाबा के प्यार, पालना और शक्ति का अनुभव कर रहे हो ना! अब कोई भी पराई और पुरानी बातें नहीं करो। मैं तो अपने सभी भाई बहिनों से यही रिक्वेस्ट करती हूँ कि कभी भी व्यर्थ बोलने, सुनने के आदती नहीं बनो। साइलेन्स की शक्ति को बढ़ाओ। जब डीप साइलेन्स का अनुभव होगा तब देह से न्यारे और बाबा के प्यारे बनेंगे। तो सभी दिल पर हाथ रखकर देखो मेरी ऐसी स्थिति है? ऐसी याद हो जो मैं अपने बाबा के साथ मूलवतन वा अव्यक्त वतन में बैठ विश्व के वायुमण्डल में शान्ति, शक्ति और पवित्रता के वायब्रेशन फैलाती रहूँ!

बाकी मधुबन की सीज़न तो वन्डरफुल है, अभी इस सीजन में दो टर्न बाबा के और हैं, देश विदेश के अनेकानेक बच्चे सम्मुख मिलन मनाने, वरदानों से अपनी झोली भरने पहुंचते रहते हैं।

अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

तपस्या वर्ष के लिए विशेष होम वर्क - अप्रैल 2015

A) मन को एकरस और शक्तिशाली बनाने के लिए मन की एक्सरसाइज करो

1) मन को एकरस बनाने के लिए हर घण्टे 5 सेकण्ड वा 5 मिनट अपने पांचों ही रूप सामने लाओ और उस रूप का अनुभव करो। इस एक्सरसाइज से व्यर्थ वा अयथार्थ संकल्पों में मन नहीं जायेगा। मन में अलबेलापन भी नहीं आयेगा। मनमनाभव का मन्त्र मन के अनुभव से मायाजीत बनने में यन्त्र बन जायेगा।

2) जैसे मोटेपन को मिटाने का साधन है खान-पान की परहेज और एक्सरसाइज। वैसे यहाँ भी बुद्धि द्वारा बार-बार अशरीरीपन की एक्सरसाइज करो और बुद्धि का भोजन संकल्प है उनकी परहेज रखो, तो मन लाइट एकरस और शक्तिशाली बन जायेगा।

3) जैसे शारीरिक हल्केपन का साधन एक्सरसाइज़ है वैसे आत्मिक एक्सरसाइज़ योग अभ्यास द्वारा अभी-अभी कर्मयोगी अर्थात् साकारी स्वरूपधारी बन साकार सृष्टि का पार्ट बजाना, अभी-अभी आकारी फरिश्ता बन आकारी वतनवासी अव्यक्त रूप का अनुभव करना – अभी-अभी निराकारी बन मूल वतनवासी का अनुभव करना, अभी-अभी अपने राज्य स्वर्ग अर्थात् वैकुण्ठवासी बन देवता रूप का अनुभव करना, ऐसे बुद्धि की एक्सरसाइज़ करो तो सदा हल्के हो जायेंगे। पुरूषार्थ की गति तीव्र हो जायेगी।

4) भल शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो, सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनों एक्सरसाइज हो जायेंगी। खुशी है दुआ और एक्सरसाइज है दवाई। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो जायेगा।

5) जैसे वर्तमान समय के प्रमाण शरीर के लिए सर्व बीमारियों का इलाज एक्सरसाइज सिखाते हैं, तो इस समय आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए यह रुहानी एक्सरसाइज का अभ्यास चाहिए। चारों ओर कितना भी हलचल का वातावरण हो, आवाज में रहते आवाज से परे स्थिति का अभ्यास, अशान्ति के बीच शान्त रहने का अभ्यास बहुतकाल का चाहिए।

6) जैसे कोई शरीर में भारी है, बोझ है तो अपने शरीर को सहज जैसे चाहे वैसे मोल्ड नहीं कर सकेंगे। ऐसे ही अगर मोटी-बुद्धि है अर्थात् किसी न किसी प्रकार का व्यर्थ बोझ वा व्यर्थ किचड़ा बुद्धि में भरा हुआ है, कोई न कोई अशुद्धि है तो ऐसी बुद्धि वाला जिस समय चाहे, वैसे बुद्धि को मोल्ड नहीं कर सकेगा इसलिए बहुत स्वच्छ, महीन अर्थात् अति सूक्ष्म-बुद्धि, दिव्य बुद्धि, बेहद की बुद्धि, विशाल बुद्धि चाहिए। ऐसी बुद्धि वाले ही सर्व सम्बन्ध का अनुभव जिस समय, जैसा सम्बन्ध वैसे स्वयं के स्वरूप का अनुभव कर सकेंगे।

7) अभी-अभी आवाज में आना और अभी-अभी आवाज से परे हो जाना - जैसे आवाज में आना सहज लगता है वैसे यह भी सहज अनुभव हो क्योंकि आत्मा मालिक है। रुहानी एक्सरसाइज़ में सिर्फ मुख की आवाज से परे नहीं होना है। मन से भी आवाज में आने के संकल्प से परे होना है। ऐसे नहीं मुख से चुप हो जाओ और मन में बातें करते रहो। आवाज से परे अर्थात मुख और मन दोनों की आवाज से परे, शान्ति के सागर में समा जायें।

8) किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, लेकिन डायरेक्शन मिले – फुलस्टॉप। तो फुलस्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? यह करना है, यह नहीं करना है, यह ऐसे है, यह वैसे है....। तो यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुलस्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा लो, सार स्वरूप बन जाओ।

9) जैसे स्थूल एक्सरसाइज़ से तन तन्दरूस्त रहता है। ऐसे चलते-फिरते अपने 5 स्वरूपों में जाने की एक्सरसाइज़ करते रहो। जब ब्राह्मण शब्द याद आये तो ब्राह्मण जीवन के अनुभव में आ जाओ। फरिश्ता शब्द कहो तो फरिश्ता बन जाओ। तो सारे दिन में यह मन की ड्रिल करो। शरीर की ड्रिल तो शरीर के तन्दरूस्ती के लिए करते हो, करते रहो लेकिन साथ-साथ मन की एक्सरसाइज़ बार-बार करो।

10) जब बाप समान बनना है तो एक है - निराकार और दूसरा है - अव्यक्त फरिश्ता। तो जब भी समय मिलता है सेकण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ, फिर कार्य करते फरिश्ता बनकर कर्म करो, फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। कार्य का बोझ नहीं हो। तो बीच-बीच में निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की मन की एक्सरसाइज़ करो तो थकावट नहीं होगी।

11) देह-भान से परे होना है तो यह रूहानी एक्सरसाइज़ कर्म करते भी अपनी ड्युटी बजाते हुए भी एक सेकण्ड में अभ्यास कर सकते हो। यह एक नेचुरल अभ्यास हो जाए, अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फरिश्ता। यह मन की ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सरल योगी बनेंगे।

12) एक तरफ मन्सा सेवा दूसरे तरफ मन्सा एक्सरसाइज़। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फरिश्ता। जैसे शरीर का नाम पक्का है। दूसरे को भी कोई बुलायेगा तो आप ऐसे-ऐसे करेंगे। तो मैं आत्मा हूँ, आत्मा का संसार बापदादा, आत्मा का संस्कार ब्राह्मण सो फरिश्ता, फरिश्ता सो देवता। तो यह मन की ड्रिल करना। मैं आत्मा, मेरा बाबा।

13) आजकल के जमाने में डाक्टर्स कहते हैं दवाई छोड़ो, एक्सरसाइज़ करो, तो बापदादा भी कहते हैं कि युद्ध करना छोड़ो, मेहनत करना छोड़ो, सारे दिन में 5-5 मिनट मन की एक्सरसाइज करो। वन मिनट में निराकारी, वन मिनट में आकारी, वन मिनट में सब तरह के सेवाधारी, यह मन की एक्सरसाइज़ 5 मिनट की सारे दिन में भिन्न-भिन्न टाइम करो तो सदा तन्दरूस्त रहेंगे, मेहनत से बच जायेंगे।

14) मन को पहले परमधाम में लेके आओ, फिर सूक्ष्मवतन में फरिश्तेपन को याद करो फिर पूज्य रूप याद करो, फिर ब्राह्मण रूप याद करो, फिर देवता रूप याद करो। सारे दिन में चलते फिरते यह 5 मिनट की एक्सरसाइज करते रहो। इसके लिए मैदान नहीं चाहिए, दौड़ नहीं लगानी है, न कुर्सी चाहिए, न सीट चाहिए, न मशीन चाहिए। सिर्फ शुद्ध संकल्पों का स्वरूप चाहिए।

15) मन को शक्तिशाली बनाने के लिए, सदा खुशी वा उमंग-उत्साह में रहने के लिए, उड़ती कला का अनुभव करने के लिए रोज़ यह मन की ड्रिल, एक्सरसाइज़ करते रहो।

B) मन्सा द्वारा शक्तियों का दान करो

1) जैसे बापदादा को रहम आता है, ऐसे आप बच्चे भी मास्टर रहमदिल बन मन्सा अपनी वृत्ति से वायुमण्डल द्वारा आत्माओं को बाप द्वारा मिली हुई शक्तियां दो। जब थोड़े समय में सारे विश्व की सेवा सम्पन्न करनी है, तत्वों सहित सबको पावन बनाना है तो तीव्र गति से सेवा करो।

2) कोई भी यह नहीं कह सकता कि हमको तो सेवा का चान्स नहीं है। कोई बोल नहीं सकते तो मन्सा वायुमण्डल से सुख की वृत्ति, सुखमय स्थिति से सेवा करो। तबियत ठीक नहीं है तो घर बैठे भी सहयोगी बनो, सिर्फ मन्सा में शुद्ध संकल्पों का स्टॉक जमा करो, शुभ भावनाओं से सम्पन्न बनो।

3) अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वृति, श्रेष्ठ वायब्रेशन द्वारा किसी भी स्थान पर रहते हुए मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा कर सकते हो। इसकी विधि है - लाइट हाउस, माइट हाउस बनना। इसमें स्थूल साधन, चान्स वा समय की प्राब्लम नहीं है। सिर्फ लाइट-माइट से सम्पन्न बनने की आवश्यकता है।

4) मन्सा सेवा के लिए मन, बुद्धि व्यर्थ सोचने से मुक्त होना चाहिए। 'मनमनाभव' के मन्त्र का सहज स्वरूप होना चाहिए। जिन श्रेष्ठ आत्माओं की श्रेष्ठ मन्सा अर्थात् संकल्प शक्तिशाली है, शुभ भावना, शुभ कामना वाले हैं वह मन्सा द्वारा शक्तियों का दान दे सकते हैं।

5) मन्सा शक्ति का दर्पण है - बोल और कर्म। चाहे अज्ञानी आत्मायें, चाहे ज्ञानी आत्मायें - दोनों के सम्बन्ध-सम्पर्क में बोल और कर्म शुभ भावना, शुभ कामना वाले हों। जिसकी मन्सा शक्तिशाली वा शुभ होगी उसकी वाचा और कर्मणा स्वत: ही शक्तिशाली शुद्ध होगी, शुभ-भावना वाली होगी। मन्सा शक्तिशाली अर्थात् याद की शक्ति श्रेष्ठ होगी, शक्तिशाली होगी, सहजयोगी होंगे।

6) जैसे अपने स्थूल कार्य के प्रोग्राम को दिनचर्या प्रमाण सेट करते हो, ऐसे अपनी मन्सा समर्थ स्थिति का प्रोग्राम सेट करो तो कभी अपसेट नहीं होंगे। जितना अपने मन को समर्थ संकल्पों में बिजी रखेंगे तो मन को अपसेट होने का समय ही नहीं मिलेगा। मन सदा सेट अर्थात् एकाग्र है तो स्वत: अच्छे वायब्रेशन फैलते हैं। सेवा होती है।

7) हर समय, हर आत्मा के प्रति मन्सा स्वत: शुभभावना और शुभकामना के शुद्ध वायब्रेशन वाली स्वयं को और दूसरों को अनुभव हो। मन से हर समय सर्व आत्माओं प्रति दुआयें निकलती रहें। मन्सा सदा इसी सेवा में बिजी रहे। जैसे वाचा की सेवा में बिजी रहने के अनुभवी हो गये हो। अगर सेवा नहीं मिलती तो अपने को खाली अनुभव करते हो। ऐसे हर समय वाणी के साथ-साथ मन्सा सेवा स्वत: होती रहे।

8) जैसे वाचा सेवा नेचुरल हो गई है, ऐसे मन्सा सेवा भी साथ-साथ और नेचुरल हो। वाणी के साथ मन्सा सेवा भी करते रहो तो आपको बोलना कम पड़ेगा। बोलने में जो एनर्जी लगाते हो वह मन्सा सेवा के सहयोग कारण वाणी की एनर्जी जमा होगी और मन्सा की शक्तिशाली सेवा सफलता ज्यादा अनुभव करायेगी।

9) जितना अभी तन, मन, धन और समय लगाते हो, उससे मन्सा शक्तियों द्वारा सेवा करने से बहुत थोड़े समय में सफलता ज्यादा मिलेगी। अभी जो अपने प्रति कभी-कभी मेहनत करनी पड़ती है—अपनी नेचर को परिवर्तन करने की वा संगठन में चलने की वा सेवा में सफलता कभी कम देख दिलशिकस्त होने की, यह सब समाप्त हो जायेगी।

10) जब मन्सा में सदा शुभ भावना वा शुभ दुआयें देने का नेचुरल अभ्यास हो जायेगा तो मन्सा आपकी बिजी हो जायेगी। मन में जो हलचल होती है, उससे स्वत: ही किनारे हो जायेंगे। अपने पुरुषार्थ में जो कभी दिलशिकस्त होते हो वह नहीं होंगे। जादूमन्त्र हो जायेगा।

11) अभी मन्सा की क्वालिटी को बढ़ाओ तो क्वालिटी वाली आत्मायें समीप आयेंगी। इसमें डबल सेवा है - स्व की भी और दूसरों की भी। स्व के लिए अलग मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। प्रालब्ध प्राप्त है, ऐसी स्थिति अनुभव होगी। इस समय की श्रेष्ठ प्रालब्ध है ''सदा स्वयं सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न रहना और सम्पन्न बनाना''।

12) समय प्रमाण अब मन्सा और वाचा की इकट्ठी सेवा करो। लेकिन वाचा सेवा सहज है, मन्सा में अटेन्शन देने की बात है इसलिए सर्व आत्माओं के प्रति मन्सा में शुभ भावना, शुभ कामना के संकल्प हों। बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो तो सहज सफलता मिलती रहेगी।

13) जितना स्वयं को मन्सा सेवा में बिज़ी रखेंगे उतना सहज मायाजीत बन जायेंगे। सिर्फ स्वयं के प्रति भावुक नहीं बनो लेकिन

औरों को भी शुभ भावना और शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने की सेवा करो। भावना और ज्ञान, स्नेह और योग दोनों का बैलेन्स हो। कल्याणकारी तो बने हो अब बेहद विश्व कल्याणकारी बनो।

14) मन्सा-सेवा बेहद की सेवा है। जितना आप मन्सा से, वाणी से स्वयं सैम्पल बनेंगे, तो सैम्पल को देखकर के स्वत: ही आकर्षित होंगे। सिर्फ दृढ़ संकल्प रखो तो सहज सेवा होती रहेगी।

15) कोई भी स्थूल कार्य करते हुए मन्सा द्वारा वायब्रेशन्स फैलाने की सेवा करो। जैसे कोई बिजनेसमेन है तो स्वप्न में भी अपना बिजनेस देखता है, ऐसे आपका काम है – विश्व-कल्याण करना। यही आपका आक्यूपेशन है, इस आक्यूपेशन को स्मृति में रख सदा सेवा में बिजी रहो।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"किसी का नुक्स (कमी) अगर निकालेंगे तो वह नुक्स अपने अन्दर घुस जायेगी, इसलिए अपने को सम्भालो" (दादी जानकी)

जिसका दिल ठीक है, उसका दिमाग भी ठीक है। अगर दिल थोड़ी ठीक नहीं है तो दिमाग भी ठीक नहीं है, भारी है। दिल में बाबा है तो कोई बात नहीं, यह मन्त्र जादू का काम करता है। अभी पुरानी बात जैसे कोई कहता है, प्लीज़ एक भी बात, कल की बात जो काम की नहीं है वो याद न आये। जो बताया है, बात याद आयी तो बाबा याद नहीं आयेगा। जितना ही प्यारा है उतना ही न्यारा है। सिखाके, समझाके न्यारा बन जाता है। फिर हमारी जो धारणाये हैं अपने पुरुषार्थ करने के लिए, तो उसमें हम बाबा को साथी बनायेंगे। सबके साथ पार्ट प्ले करने में साक्षी हो रहेंगे। बुद्धि में धारणा ठीक होगी। उसमें अटेन्शन खिंचवाने के लिए बाबा जो नियम बनाके देता है, उस पर चलने वाले और चलाने वाले वन्डरफुल हैं।

कई बार कई स्थानों पर आना जाना होता है तो अपने आप टाइम पर खींचता है, जबकि हम तो घड़ी (हथकड़ी) नहीं पहनती हूँ। फिर भी जैसे अमृतवेले का, ट्रैफिक कन्ट्रोल का योग कोई इतफाक से मिस किया होगा। तो नियम को पालन करना भी हमारी सेफ्टी है। अनायास ही हमको साइलेंस में रहने के लिए बहुत अच्छा लगता है।

हम निर्विकारी पूज्य बन रहे हैं, यह निश्चय और नशे की कमाल है। निमित्त मात्र समर्थ संकल्प से कई कार्य हो रहे हैं, हुआ ही पड़ा है, पर निमित्त बाबा दिखाता है कि संकल्प ऐसी क्वालिटी वाला रखेंगे तो तुम्हारी कमाई है। तो जी बाबा करके करते जाओ, कभी भी यह नहीं सोचो कि यह कैसे हो सकता है या यह नहीं हो सकता है, ऐसे न सोचो, न कहो।

ड्रामा प्लैन अनुसार बाबा ने जो पालना दी है, जितनी अच्छी गुह्य ते गुह्य, नई नई बातें रोज़ सुनाता है तो बाबा को क्या कहें, मेरा बाबा या मीठा बाबा या वन्डरफुल बाबा! जो हमारे परिवर्तन के लिए ऐसी बातें हमारे अन्दर ऐसी लगा देता है, जो भूल नहीं सकती, मेरा तो यह हाल है। ऐसा किसका हाल है, बाबा ऐसी बात सुनाता है, बाबा की बात ही कमाल का काम करती है। जो अपने में उम्मीदें नहीं थी, इतना मेरी कोई स्थिति बन सकती है, आज मुझे कई प्राइवेट बताते हैं, आज मुझे उम्मीदें हैं, मेरी अवस्था बन सकती है। इसमें है अपनी घोट तो नशा चढ़े। ज्ञान को मंथन करो, प्रैक्टिकल में लाने के लिये नशा चढ़ता है, परिवर्तन आता है। नशे में परिवर्तन आता है, न भी चाहें, तो भी परिवर्तन आता है। एक ही नशा है, नारायण समान बनने का, इसी में फायदा है, खुशी है। बाकी देह-अभिमान वश और कोई भी नशा पीने का, खाने का है तो उसमें नुकसान ही है। पहनने का भी नशा होता है, बाल बनाने का भी, शू पहनने का भी... किसी के पाँव में कभी कोई चप्पल होगा, कभी कोई चप्पल होगा। यह मेरे को अच्छा नहीं लगता है इसलिए एक ही चप्पल है, जितना बुद्धि को सिम्पल बनायेंगे, प्रैक्टिकल लाइफ में लायेंगे, अच्छा सैम्पल बनेंगे।

जितना यज्ञ में सफल करेंगे, उतना बाबा देने के लिए बंधायमान है। सेवास्थान बाबा के हैं, सेवा करने वाले बाबा के बच्चे हम निमित्त सेवाधारी हैं। कई हैं निमित्त बने हुए का भी नुक्स निकालते हैं, किसी का नुक्स निकालेंगे तो वो नुक्स हमारे अन्दर घुस जायेगा इसलिए सम्भालो अपने आपको, नहीं तो फिर कर्म कूटना पड़ेगा। तो बहुतकाल से श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा ऐसा हो, जो इन्ट्रेस्ट पर इन्ट्रेस्ट मिलता रहे। ईश्वरीय स्नेह, रूहानी दृष्टि में ईश्वरीय स्नेह भर जाता है, जो हमको प्युरीफाई कर देता है। बाबा की दृष्टि हमको क्लीन कर देती है। अभी हमारी अन्तिम स्थिति जैसी बनेगी तो अन्त में भी गैरन्टी रहेगी। लेकिन ऐसे बनेगी नहीं, बनानी होगी। इसके लिए बाबा लाइट बना करके, माइट भी दे रहा है। तो अपने को और बाबा को देखो तो सब अच्छा है। ऐसी जीवन जीना सीखना हो, सच की राह पर चलना हो, बाबा के दिल पर बैठना हो तो एक दो से प्रेरणा मिले।

दूसरा क्लास

“कभी कोई ऐसी भूल नहीं करो जो कोई को दु:ख पहुंचे, दु:ख देना और दु:ख लेना मेरा धंधा नहीं”

(दादी जानकी)

कमाल है बाबा की और कमाल है हमारे भाग्य की। दो शब्द मेरे बुद्धि में दिन रात घूम रहे हैं – भाग्य और भगवान। मेरे हाथों में मेरा भाग्य है क्योंकि भगवान मेरा साथी है, भगवान पढ़ाई पढ़ाकर हमारा भाग्य बनवाता है। बाहर वाले जो पढ़ाई पढ़ते हैं वो पहले पढ़ते हैं फिर बिचारे कमाते हैं। कोई बैरिस्टर दाल रोटी जितना भी नहीं कमाता, कोई बहुत कमाता है। यहाँ भगवान की पढ़ाई में हमारी कमाई है, पढ़ाई करते ही कमाई है, तो पढ़ाई की वैल्यु को देख कमाई कर रहे हैं। बाबा थोड़ा समझाके फिर कहता है धारण करके औरों को समझाओ।

मैंने विदेश में देखा मन्दिर के पुजारी सुबह को मन्दिर की पूजा करेंगे, शाम को लड़की लेके घूम रहे हैं, शराब का ग्लास हाथ में है। तो मुझे अन्दर आया यह भारत की ग्लानि हो रही है। आप जाके देखो अमेरिका, इग्लैण्ड, जर्मनी में मन्दिर होंगे, पुजारियों को भारत से मंगाते हैं, उसको रहने नहीं देते हैं ताकि वह मन्दिर की सेवा करे। और बाबा आ करके हम बच्चों को सच्ची राह दिखाता है, सच की राह पर चलना सिखाता है और हम भी चलने लग पड़ते हैं, पीछे नहीं देखते हैं। जब जाना है वतन की ओर, न इधर देखो न उधर देखो, न पीछे देखो, न फ्यूचर का फिकर करो क्योंकि वापस घर जाना है, उस यात्रा पर जाते हैं तो वापस लौटते हैं तो फिर वही हाल हो जाता है। यात्रा पर कोई नियम रखते हैं, पवित्रता या खान-पान का। जब यात्रा से वापस आते हैं तो क्या करते हैं! और हमारी यात्रा ऐसी है, पवित्रता के आधार पर चल रहे हैं, यात्रा सफल कर रहे हैं, अन्त में प्रभु मिलन के लिए जा रहे हैं।

परमात्मा बाप जो परमधाम का वासी है, वो मेरा माता पिता, शिक्षक, सखा जिसको भक्ति में कहते हैं कि तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे, कोई न जाने तुम्हारा अन्त, ऊंचे ते ऊंचा भगवंत। वो बाप ऊंचे ते ऊंचा उसको कोई नहीं जानते, उसके अन्त को पा करके सदा के लिए खुश रहने का वरदान ले लिया है। सदा खुश, खुशी का खज़ाना भी मिला है, खुराक भी मिली है। खुराक मजबूत बनाती है, खजाना बांटना सिखाती है। एक दान है – दे दान छूटे ग्रहण, तो तन-मन-धन या सम्बन्ध में ग्रहचारी बैठी है, वो बाबा की याद से दे दान माना जो हमारे में कमी-कमजोरी है उसको खत्म करो तो ग्रहण हट जायेंगे।

फॉरगिव और फॉरगेट यह इतनी अच्छी दवाई है इससे सदा लाइट रह करके बाबा की माइट खींचने की यह दवा है। अपने को फॉरगिव करो या दूसरों को, ऐसा फॉरगिव करो जो भूल जाये। इसने किया या मैंने किया, चलो जो हुआ अब तो बाप के बने हैं, तो बाप का बनने से ग्रहचारी गई। बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही माना एक तो अल्ला से सुख मिलता है, दूसरा अंदाज नहीं कितना सुख मिलता है! अतीन्द्रिय सुख में रहते हैं।

समय कहता है ऐसा समय कब तक चलेगा? यहाँ पाप और भ्रष्टाचार है, यह कहाँ तक चलेगा? आखिर तो इसका अन्त आयेगा, परन्तु वो तभी आयेगा जब श्रेष्ठ सत् कर्म करने वाली आत्मायें भले लाखों में से कोई हों, तो उनके आधार से दुनिया सुधर जायेगी। दुनिया बिगड़ी कैसे है, यह मैंने देखा है कोई बात का फैशन निकलेगा सारे विश्व में जायेगा। अभी जहाँ जायेंगे, सारी विश्व में यह कुर्सियाँ मिलेगी आपको। यह बिजली बत्तियाँ हैं, सारे विश्व में जहाँ भी जायेंगे यह मिलेंगी आपको। ऐसे यह भी जब हमारा चारों ओर दुनिया भर में विश्व भर में देखेंगे, शुरू हो जायेगा क्योंकि साधन इसीलिए हैं इसलिए यह साइंस सेवा को बढ़ाने के लिए अच्छा साथ दे रही है। यह भी आप सबने देखा है, पिछले 50 साल के अन्दर अमेरिका इग्लैण्ड, चाहे बॉम्बे में बड़ी-बड़ी बिल्डिग, अभी देखो दुबई में कितनी बड़ी बड़ी बिल्डिंग्स बनाई हैं। तो यह झूठी और मायावी दुनिया इसमें फंसने से दु:ख मिलता इलाही है। और बाबा का बनने से सुख मिलता है इलाही है।

एक बाबा से सब कुछ मिला, सुख-शान्ति, प्रेम-आनन्द के झूले में झूलाना सिखाया बाबा ने। पुराने जमाने में हरेक घरों में एक अच्छा झूला अवश्य होता था, जिसमें बैठ करके भक्ति में राम नाम का जाप करते थे। पूरा परिवार झूले में झूलते थे। खटिया से गिर सकते हैं, झूले से गिर नहीं सकते इसलिए गीत है उड़न खटोले में उड़ जाऊं...। तो बाबा हमारे को देह से न्यारा, प्रभु का प्यारा बनाता है। देह के साथ अनेक बन्धन हैं, सतयुग वाली आत्माओं को भी रावण माया ने विकारी बना दिया है। अभी बाबा कहते बच्चे - तुम्हें निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी बनना है। दूसरा निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सोय। मनुष्य को दु:ख होता है, कोई मेरी निंदा करता है, पर बाबा समझाता है वही हमारा मित्र है। जो हमारी प्रंशसा करे, अन्दर एक बाहर दूसरी करे, वो मेरा मित्र नहीं है। बाहर से काम निकालने के लिए मेरा मित्र है, पर किसी ने निन्दा की कोई हर्जा नहीं और ही मैं सावधान हो गई, खबरदार हो गई, मेरे से कोई ऐसी भूल न हो जो किसी आत्मा को दु:ख मिले। तो दु:ख न देना, न लेना क्योंकि यह हमारा धन्धा नहीं है, यह बाबा ने सिखाया है। तब तो सब मीठा

बाबा, प्यारा बाबा, शुक्रिया बाबा, मेरा बाबा कहते हैं ना। बाबा से मिलने आये हो ना तो अच्छी तरह से प्रभु के प्यार की मस्ती में ऐसी शुद्ध आत्मा बन जाओ जो बीती सो बीती, तो फ्यूचर हमारा बहुत अच्छा बन जायेगा और प्रेजेन्ट में बाबा को याद करो तो प्रत्यक्ष बल फल के रूप में मिलेगा। सेवा करो, प्रत्यक्ष फल पाओ। धन से करो, तन से करो, मन से करो, सेवा में बड़ा अच्छा फल मिलता है। माली सिम्पल रहता है पर मेहनत करता है, जब बीज बोता है तो पुराना सब निकालके खलास करता है। नया बीज बोता है और अच्छा ध्यान रखता है कि उसको धूप मिले, पानी मिले। माली कभी महलों में नहीं रहते हैं, वो तो वहीं बाग-बगीचों में नज़दीक ही कहीं रहते हैं ताकि वो सेवा करें, सिम्पल रहते हैं। अभी हमारा भी संगमयुग पर रहन-सहन सिम्पल है।

संगमयुग पर जो यह संगठन की शक्ति है, रोज़ अमृतवेले बाबा कितना हम बच्चों को अपनी याद में रहने की पॉवर देता है। जो हमारे अन्दर कोई और ख्याल न आवे, तो अमृतवेला और नुमाशाम सारा दिन भी जो कुछ काम करते हैं वो भी कर्म बाबा ने सिखलाया है, यह करना है, यह नहीं करना है। जिसको कहा जाता है श्रीमत। वैसे पहले यह पता नहीं था श्रीमत क्या होती है, मनमत क्या होती है? जब बाबा के बने हैं, पता चला यह श्रीमत है, यह मनमत है, यह परमत है। तो परमत पर चलने वाला गधा होता है। उसको कहेंगे यह करो, यह करो तो बिचारा वही करता रहेगा, बिचारे को बुद्धि ही नहीं है। तो बाबा शुरू में बताता था गॉड का बच्चा गॉड, गधे का बच्चा गधा। जो गधे का बच्चा होगा वो गधा ही होगा ना यानि परमत से चलने वाला, अपनी मत नहीं। बाबा हमको श्रीमत से अच्छी मत देता है, मनोवृत्ति को साफ करता है, वायुमण्डल ऐसा बना देता है। जब बाबा आता है उस समय कितना शान्त में बैठते हैं, किसी की खांसी का भी आवाज नहीं होता है, यह है ईश्वर से प्यार, प्रेम।

छोटे बच्चों को प्यार किया जाता है, गोप-गोपियों का प्रेम है फिर रूहानियत में रहने से, ईश्वरीय स्नेह मिलता है। जो बाबा हमेशा कहते हैं ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न याद और प्यार, हमारे अन्दर क्या है? और कुछ नहीं है। ईश्वरीय स्नेह से सम्पन्न हैं। कोई का अवगुण न देखते हैं, न दिखाई पड़ता है तो सर्वगुण सम्पन्न बन जाते हैं, इज़ी है। देवतायें सर्वगुण सम्पन्न हैं। हमको क्या बनना है? बाबा कहते, बच्चे संगमयुग है अभी तुमको बनना है, अभी बना रहा हूँ, क्या बना रहा हूँ? मनमनाभव फिर मध्याजीभव यानि स्वदर्शन चक्र फिराओ।

मुझे यह बनना है, उसके लिए ब्रह्मा साधारण रूप में भी कैसे परमात्मा बाप को अपना बना करके हमको मात-पिता के रूप में खींच रहा है और वही शंकर मिसल अशरीरी हो तपस्या कर रहा है। तो एक तरफ ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं फिर विष्णु चतुर्भुज बनना है शंख, चक्र, गदा, पदमधारी कमलफूल समान। भले घर में रहो काम धन्धा करो पर मुझ बाप को याद करो, यह कौन कह रहा है? परमात्मा बाप ब्रह्मा मुख द्वारा यह बात जिसको जितनी समझ में आ गयी ना, बस इसलिए बाबा सिखाता था बच्चे एक है मनुष्य की महिमा, दूसरी है देवताओं की महिमा, बीच में अभी है परमात्मा की महिमा। आज के मनुष्य अपनी महिमा कराने के लिए क्या करेंगे? अच्छा पैसा कमायेंगे या गुरु, महात्मा, सन्यासी बनके बैठेंगे, यह महल बनायेंगे या कुछ करेंगे परन्तु परमात्मा बाप करनकरावनहार, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, आनन्द का सागर, शान्ति का सागर, पतित-पावन सर्वशक्तिवान है। तो बाबा समझाता है ज्ञान सागर मिला है जिसमें टुबकी लगाते रहो तो अशरीरी बन जायेंगे।

प्रेम के सागर में, आनन्द के सागर में ऐसे याद में रहने से, सागर में टुबकी लगाओ तो उसमें यह जो पिया के साथ हैं उसके लिये बरसात है। बादल न बनें तो बरसात कैसे पड़ेगी? बादल सूर्य की किरणों से सागर से पानी खींचते हैं, ऊपर रहते हैं, वहाँ से वर्षा होती है तो क्या से क्या हो जाता है। कितनी ठण्डाई कितना अच्छा... अगर बरसात न पड़े तो संसार में कैसा होगा? है तो कुदरती वन्डर लगता है, प्लेन में चढ़ो बादल नीचे, प्लेन भी पास करके आगे बढ़ता है। बादल अच्छे लगते हैं। तो बाबा कहते हैं यहाँ आये हो बादल बन करके जाकर वर्षा करने के लिए। मधुबन में आते हो तो एक तो रिफ्रेश होने के लिए दूसरा बैटरी चार्ज करने के लिए क्योंकि कभी-कभी वहाँ बैटरी खाली हो जाती है, संसार में लोगों के साथ अपने को चलाना होता है और यहाँ बैटरी चार्ज हो जाती है तो कमलफूल समान रहने में इज़ी लगता है। तो यह बाबा समझाते हैं बच्चों को, बच्चे कमलफूल समान रहो, स्वदर्शन चक्र घुमाओ, ज्ञान और योग की पराकाष्ठा जो मिली है उससे जो ताकत जमा हुई है, वो कमल फूल समान बनाती है।

कमल के फूल आपस में रहते हैं पानी दिखाई नहीं पड़ता है, पानी कोई साफ नहीं होता है वो पानी कोई पिया नहीं जाता है, पर संगठन की शक्ति से कमल का फूल बन जाते हैं। उसकी रचना जो है वो भी मिट्टी में होती है। तो कमल फूल सम रहने से जो रचना है वो भी अच्छी काम की हो जाती है। अगर कमल के फूल समान न्यारे नहीं रहते हैं तो परमात्मा का प्यार नहीं खींचते हैं फिर दुनिया में फंस जाते हैं। परमात्मा का प्यार दुनिया से न्यारा बना देता है, उसके प्यार से जो रचना है वो भी सुन्दर बन जाती है। तो यह भी गीत अच्छा है रचना जिसकी इतनी सुन्दर तो रचता कैसा होगा? इतने हजारों बाबा के बच्चे, बाबा के घर आते हैं लेकिन आना क्या, क्यों आये हैं? तो हरेक कहेंगे बाबा से मिलने आये हैं। मिल करके क्या करेंगे? बाबा ने हमारे में जो उम्मीदें रखी हैं वो पूरी करेंगे। जवाब है हर बात का, ऐसे नहीं मिल करके, बाबा प्यार से मुरली चलावे, समझावे फिर हम हाथ उठावें, बाबा कभी कहते दोनों हाथ उठाओ, कभी ताली बजाते परन्तु वो तो उसी घड़ी किया। लेकिन बाबा हम बच्चों को जो इतना अन्दर ही अन्दर से प्यार देता है, शक्ति देता है वो सदा साथ रहे।

इस शरीर में रहते मैंने कभी न दु:ख दिया है, न दु:ख लिया है, इससे दुआयें बहुत मिली हैं। अभी मैं किससे मिलेंगी तो कहेंगे दुआ दो, मैं कहती दुआ मांगने से नहीं मिलती, पर दुआ दो ना। अच्छा दुआ दूँ, तो दुआ कैसे मिलेगी? जब बाबा का आज्ञाकारी, वफादार, इमानदार बच्चा बनेगा तो दुआयें मिलेगी। तो दुआयें इतनी मिलती हैं जो दुआयें ही चला रही हैं। मेरे से कोई पूछते हैं तुम कैसे चलती हो? बाबा का प्यार, बाबा के बच्चों की दुआयें इतनी मिलती हैं जो इतनी शक्ति पैदा होती है, जो कभी कोई दु:ख नहीं होता है। अगर कोई देह के भान में आ करके, कभी भी कोई दु:ख होता है, कोई फीलिंग आती है तो उस घड़ी मुझे बाबा याद नहीं है, बाबा की याद है, अशरीरी स्थिति है, वृत्ति साफ है तो दृष्टि महासुखकारी है। जो बाबा ने सुनाया है, जैसे बाबा ने हमको चलाया है, वैसे आप भी चलते चलो, उड़ते रहो, फरिश्ता पंछी बन सतयुग में पहुँचो। अच्छा।

29-10-14

"श्रीमत क्या है? कहाँ से मिलती है?" (दादी गुल्जार)

ब्राह्मण जीवन का जीयदान है - मुरली। ब्राह्मण जीवन की श्रीमत है - मुरली क्योंकि कई पूछते हैं कि बाबा कहते हैं श्रीमत पर चलो, तो वह श्रीमत कौनसी है? क्या बड़ी दादी कहती, वही श्रीमत है? हमारी निमित्त टीचर जो कहती है, वही श्रीमत है, क्या श्रीमत है? लेकिन यह हमारी दादी जी हैं या निमित्त टीचर्स हैं, वह भी आपको अगर राय देंगे तो किस आधार पर देंगे? मुरली के आधार पर ही देंगे ना। बाबा ने यह कहा है, ऐसे ही कहेंगे ना। मैं आपको ऐसे कहती हूँ कि यह करो, यह तो नहीं कह सकते ना। बाबा ने ऐसे श्रीमत दी है, तो वह श्रीमत हमारी है - मुरली। और आप सबको अनुभव होगा कि मुरली की श्रीमत में इतनी ताकत है, अगर आपको कोई भी दवाई मन्सा की, वाचा की चाहिए, कर्मणा में योगी बनने की चाहिए, सम्बन्ध-सम्पर्क में सबसे यथार्थ चलन में चलें, सम्बन्ध में आयें, कोई भी दवाई अगर आपको चाहिए, तो कोई भी मुरली आप हाथ में उठा लो। उसी मुरली में वह मिल जायेगी। तो मुरलियों की बुक या मुरलियों की कुछ कापीज़ हर एक को अपने पास रखना चाहिए, यह हमारी बहुत आवश्यक चीज़ है।

तो यह मन के बीमारियों की सब दवाईयां मुरली में हैं। किसी भी प्रकार के सवालों का जवाब मुरली में मिल सकता है। मन चंचल है, विचलित है उसको अचल बनाने के लिये अगर आप कोई भी मुरली विधिपूर्वक और लगन से पढ़ो तो आपको सब सवालों का जवाब मिल जायेगा।

आप भाग्यवान हो जो यह थोड़े से दिन आपको बाबा ने कमाई जमा करने के लिये दिये हैं क्योंकि फिर भी वहाँ तो वायुमण्डल दूसरा यानि बाहर का होता है। यहाँ के वायुमण्डल में तो जहाँ जाओ वहाँ एक ही बात है। यहाँ तो एक ही काम है अपना खज़ाना जमा करना और क्या काम है! जो ड्युटी पर आते हैं वह अपनी ड्युटी पर जाते हैं, बाकी आप लोग जो रिफ्रेश होने आते हैं, उनको तो और कोई काम नहीं है। और बाबा ने इतना अच्छा सहज तरीका सुनाया है, मुरली सुनी तो समझो मन की खुराक खाई। जैसे तन के लिए नाश्ता खाते हैं तो ताकत आती है ना। ऐसे मन को मुरली सुनने से रिफ्रेशमेन्ट मिलती है।

यह बुजुर्ग मातायें भी हमारे विश्व विद्यालय का श्रृंगार हैं, माताओं को देख करके बाबा इतना खुश होता था। मातायें कहती बाबा हम पहले आते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन बाबा कहता अभी वह ड्रामा तो बदल नहीं सकता। वह तो ड्रामा में लिपट गया ना इसीलिए बाबा कहता था, माताओं को मैं फ्री देता हूँ। खास माताओं के ऊपर रहम करता हूँ कि माताओं को इतनी प्वाइन्ट्स याद रखने की जरुरत नहीं है। माताओं को और कुछ याद भी न रहे तो कोई बात नहीं, तुमको माफ कर दूँगा, कुछ नहीं पूछूंगा। ड्रामा क्या है बताओ, 84 जन्म क्या है? यह सब तुमको फ्री है, इतनी मेहरबानी बाबा माताओं के ऊपर करता है। बाबा कहता था चलो, एक अक्षर तो याद रख सकते हैं। ऐसे पोत्रे-धोत्रे की बात घण्टों बैठके सुनायेंगी लेकिन मुरली की प्वाइन्ट थोड़ी गुह्य होती है इसीलिए भूल जाती है। तो बाबा ने कहा चलो भूल जाती है, कोई हर्जा नहीं लेकिन एक अक्षर तो याद रख सकती हो कि नहीं? जो एक अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं वह हाथ उठाओ। वह एक अक्षर है - बाबा। बस। यह याद रख सकते हो? राम, राम, राम तो बहुत बारी किया लेकिन वह मरा, मरा, मरा हो गया। लेकिन बाबा, बाबा शब्द तो याद रख सकती हो कि नहीं?

बाबा कहता है जब बाबा शब्द बोलेंगी, तो बाबा क्या देता है, वह भी याद आयेगा ना! बाबा से प्यार क्यों होता है? किसी को भी पिता से प्यार क्यों होता है? वर्सा मिलता है, तभी प्यार होता है। तो बाबा कहते हैं जब बाबा शब्द याद रखेंगी तो वर्सा तो याद आयेगा ही। और वर्सा क्या याद आयेगा? हम प्रिन्स-प्रिन्सेस बनेंगी। बाबा कहने से पवित्रता का वर्सा आपको अवश्य मिलेगा क्योंकि बाबा देता ही पवित्रता है और देता ही क्या है! इसीलिए एक बाबा शब्द कभी नहीं भूलो। बस। बाबा कहा बेड़ा पार। यह क्या मुश्किल है? बाबा की श्रीमत तो याद आयेगी ही। तो और सब भूल जाए परन्तु सिर्फ बाबा-बाबा शब्द नहीं भूलना। मरने तक बाबा शब्द मुख से निकले। बस।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

टीचर्स अब अपनी झोली दुआओं से भरपूर करो

हम निमित्त सेवाधारी टीचर्स को बाबा का वरदान है बच्ची तुम हो समर्पित, मरजीवा, अवतरित आत्मा। तो मैं इस वरदान को सदा अपनी झोली में रखती हूँ, मेरी झोली से यह वरदान बह तो नहीं जाता? मैं तेरे मेरे, स्वभाव, संस्कार में अपनी झोली खाली तो नहीं कर देती हूँ?

हम सबको यह बहुत बड़ी कल्प की लॉटरी है। अभी लॉटरी गॅवाई तो कल्प-कल्प की गई। ऐसी मेरी मन की श्रेष्ठ भावना खुद के लिए है? दूसरों को नहीं देखो। मैं इतनी सच्ची-सच्ची महान पुण्य आत्मा हूँ? मेरा हर सेकण्ड, श्वांस पुण्य में जाता है? हम अगर व्यर्थ भी सोचते हैं तो यह भी गुप्त पाप की सज़ा है। यह कर्मों के गुह्य गति की बहुत बड़ी फिलासॉफी है। पुण्यात्मा वह है जो न व्यर्थ देखे, न व्यर्थ सोचे, न व्यर्थ बोले। तो मैं ऐसी पुण्य महान आत्मा हूँ? जिसका एक श्वांस भी व्यर्थ न जाता हो? हम ऐसा तो सोचते या बोलते नहीं जो पुण्य के बदले पाप बन जाये? हम आये हैं पुण्य की कमाई करने तो देखो पुण्य के बदले पाप तो नहीं बन रहा है? इस गुह्य फिलासॉफी को बहुत-बहुत ध्यान पर रखना है। हम कोई सिर्फ आये हुए स्टूडेन्ट को कोर्स कराने वाली या मुरली सुनाने वाली टीचर्स नहीं हैं। परन्तु हमारा एक एक सेकण्ड, श्वांस ऐसा कल्याण की सेवा में, महान कार्यों में सफल होता है? या अन्दर ही अन्दर अपने आपमें कमाई के बदले तेरी मेरी बातों में गंवाती हूँ? यदि कोई किसी बातों में घुटका खाते हैं तो घुटका खाना माना गंवाना। यह लॉटरी कल्प में फिर मुझे किसी जन्म में नहीं मिलनी है इसलिए यह हमारा जन्म डायमण्ड जन्म है। तो मेरा एक-एक मिनट सफल होता रहे। मैं ऐसा पात्र बनूँ जो दूसरे मुझे हर मिनट दुआयें दें, ऐसा मैं सुखदाता की बच्ची सुखदाई हूँ या अपने स्वार्थ के पीछे दुआयें लेने के बदली कभी दूसरे से बद दुआयें भी ले लेती हूँ? कोई को दुःख देना माना बद-दुआ लेना।

एक है सुख देकर दुआयें लेना, एक है दुःख देकर बददुआ लेना, एक है न दुआ लेना, न बददुआ लेना। बाबा को जो देना है देवे–मुझे क्या पड़ी है जो बैठकर खुद मेहनत करूं। ऐसे तो समय की शक्ति को नहीं गंवाते? कई ऐसे थक जाते, परेशान होते–सोचते मैं क्या करूं... या ऐसा लक्ष्य रख चलते जो हर पल सबकी दुआयें मिलती रहें!

मैं बड़ी हूँ या छोटी हूँ, यह भूल जाओ। यहाँ कोई बड़ा छोटा नहीं है, बड़ा बाबा है मैं कौन सी बड़ी हूँ! दादी कोई बड़ी नहीं है। मैं वर्ल्ड सर्वेन्ट हूँ, जो खुद को बड़ा समझता है वह बाबा की इनसल्ट करता है। बड़ा एक बाबा है हम कोई दादियां, दीदियां बड़ी नहीं। हम छोटे ते छोटे सर्वेन्ट हैं। जो जितना बड़ा है वह उतना दुःख पाता है इसलिए न मैं जिम्मेदार हूँ, न मैं दुःख के झंझटों वाली हूँ। अगर मुझे बड़ा बनना है तो सिर पर झंझटों की पाग (टोपी) पहनो। अगर सिरदर्द करना है तो बड़ी बनो। अगर सिरदर्द से मुक्त होना है तो छोटी रहो इसलिए मैं कभी नहीं सोचती कि मैं बड़ी हूँ–बड़ा बाबा बैठा है। हम तो निमित्त हैं, सेवाधारी हैं। कभी भी ब्रह्मा बाबा ने यह नहीं कहा कि मैं बड़ा हूँ। तो हम कौन हैं? मम्मा ने कभी नहीं कहा कि मैं तो जगत अम्बा हूँ। तो यहाँ कोई भी बड़ी टीचर नहीं बैठी है। यहाँ हम सब छोटे-छोटे फूल हैं। न हम जवाबदार, न तुम जवाबदार। जवाबदार एक है। जितनी हम विद ऑनर और विद ऑनेस्ट सेवा करेंगे वही मेरे जीवन का रिकॉर्ड है। विद ऑनर्स, ऑनेस्टी से सेवा करो, बस। संगम पर हमारा कोई भी टाइटल नहीं है। यह हमारे यज्ञ की बहुत बड़ी इनसल्ट है, प्राब्लम है जो कोई टीचर कहे कि यह मेरा स्टूडेन्ट है, मेरा स्टूडेन्ट सोचना भी चोर बनना है। स्टूडेन्ट बाबा ने भेजा हमने कौन सी मेहनत की।

अगर कोई टीचर कहती यह मेरी एरिया है, यह तुम्हारी एरिया है। यह भी भगवान की इनसल्ट है। यह तो कलियुग की एरियायें हैं, हमारे बेहद की दुनिया में कोई एरिया नहीं। ओ मेरी बहिनों, अब हदों का त्याग कर प्रेम से एक दूसरे से हाथ में हाथ मिलाकर सेवा करो। सारा संगठन हमारा एक है। यह तो निमित्त कार्य को चलाने के लिए, मैनेज करने के लिए अलग-अलग साधन बनाये गये, इसलिए हम मन से भी त्यागी हैं, समर्पण हैं। हम रूहानी मिलेट्री हैं, बाबा जहाँ बिठाये, जो खिलाये, हर एक अपने ज्ञान-योग के अनुभवों से सबको खूब रिफ्रेश करो। अब सभी हैण्ड्सअप करके मन से त्यागी बनकर, उपराम बनकर सेन्टर्स को बाबा की अमानत समझकर, खुद ज्ञान योग की पढ़ाई वा भट्ठी करो और कराओ। मैं बड़ी टीचर हूँ, छोटी टीचर हूँ...यह सब भूल जाओ। बाबा का पहला फरमान है-देह सहित, देह के सब सम्बन्ध भूल... तो मेरा सेन्टर मामेकम् है क्या? मैंने कोई स्टूडेन्ट को जन्म दिया है क्या? अलौकिक जन्म दाता एक है इसलिए हमारी यह शुभ भावना है कि आप अपना और सर्व का कल्याण करो। अपने कल्याण में ही विश्व कल्याण है। अच्छा। ओम् शान्ति।